हिन्दी - विभाग.
डॉ० कविता कुमारी सिंह
B.A, I

विषय - **सूफी काव्य**

सूफी काव्य में प्रेम का चित्
एकान्तिक और आदर्शात्मक है, तथा नाि
की अपेक्षा नायक के विरह को अधिक
विस्तार दिया गया है। जहाँ कहीं भी प्रेम
वहीं विरह है, प्रेम में निहित अमृत तत्

" जहाँ प्रेम तहाँ विरहा जानहु।
विरह बात जनि लघु करि मानहु।"

जायसी ने सर्वप्रथम प्रेम त
उसके बाद सृष्टि की उत्पत्ति बतलाई है।
कहा है कि विरह की अग्नि से ही सूर्य
है और यह ज्योति संसार में स्वर्ग को
में पृथ्वी तक पहुँच जाती है। इतना ही
स प्रेम के ही धुँए से मेघ श्यामल
हु, केतु, सूर्य और चन्द्र दग्ध है:-

प्रेमी पूर्ण आत्मसमर्पण कर देता है। सूफी मत के अनुसार जीवात्मा प्रीति की रीति में बन्ध कर ही विरह-व्यथा से पीड़ित होती है। प्रेममार्ग में बाह्य शारीरिक पक्ष गौण और आन्तरिक पक्ष प्रधान है। उनका अंतिम लक्ष्य आत्म-दर्शन है। इसलिए सूफी कवियों ने प्रेम को आध्यात्मिक रूप प्रदान किया है। सूफी कवियों के अनुसार ईश्वर एक है जिसे हक कहते हैं। उसमें और आत्मा में कोई अन्तर नहीं है। उनमें अद्वैत भावना है। आत्मा या बन्दा

इश्क के रास्ते से हक तक पहुँचता है। प्रेम के नशे में ही ईश्वर की अनुभूति होती है और माया (शैतान) साधक को निर्दिष्ट मार्ग से विचलित करने का प्रयास करता है। माया (शैतान) से बचने के लिए गुरु की आवश्यकता होती है। इन्हीं व्यापक सिद्धान्तों को लेकर प्रेम-काव्य का चित्रण हुआ है। इन्हीं सिद्धान्तों पर जायसी तथा अन्य सूफी कवियों का रहस्यवाद आधारित है।

रविवार की आदिन ग्रह नहीं दिखा,
राजहि दिवस जरा कौ चिन्का।
दिनहि सधार दिन जाइ पतारा,
फिर न रहे तेहि आदि अपसा।"

सूफी कवियों ने जहाँ प्रेम की उत्कट भावना में विश्वास रखते, वहीं दूसरी ओर हिन्दू धर्म के आदर्शों को सौजन्य की दृष्टि से देखते। इस भावना के आधार पर प्रेमकाव्य की रचना हुई। मानव मात्र के कल्याण के

लिए प्रेम-भक्ति रूपी संजीवनी बूटी के रूप जायसी ने प्रदान किया। यद्यपि ने अपनी प्रेम-भक्तिमयी वाणी के द्वारा हिन्दू-मुसलमानों के आंतरिक वैमनस्य को किया।

स्थूल रूप से कहा जा सकता है कि सूफी मत भारतवर्ष में चार सम्प्रदायों रूप में आया:—

1. चिश्ती सम्प्रदाय — बारहवीं शताब्दी के

2. सुहरावर्दी सम्प्रदाय — तेरहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में
3. कादरी सम्प्रदाय — पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में
4. नक्शबन्दी सम्प्रदाय — सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में।

उन चारों सम्प्रदायों का प्रभाव-

ईश्वरोन्मुखी प्रवृत्ति के कारण साधारण जनता पर विशेष मात्रा में पड़ा। हिन्दू समाज में निम्न दल के व्यक्ति जिन्हें समाज में उचित सुविधाएँ प्राप्त नहीं होती थीं, प्रायः इन सम्प्रदायों में दीक्षित होते रहे।

मंगलवार 10

इन सम्प्रदायों से प्रभावित प्रेमकाव्य का परिचय तो वैसे चारणकाल से ही मिल जाता है उसके पश्चात जायसी के पूर्व कई प्रेमकाव्य लि[खे] गये — स्वप्नवती, मुग्धावती, मृगावती, रत्नाव[ली], मधुमालती, प्रेमावती। इसके अतिरिक्त जो शेष उनका कोई विशेष प्रमाण हमें नहीं मिलता।

सूफी काव्य की विशेषताएँ—

• प्रेममार्गी कवियों की प्रेमगाथाएँ भारतीय चरित[ों] की सर्ग-बद्ध शैली पर न होकर फारसी की

मसनवियों के ढंग पर रची गयी थी।

2. उनकी भाषा अवधि है, जिसमें लोकप्रचलित शब्दों का बाहुल्य है।

3. उनकी कथाएँ प्रायः हिन्दू जीवन से सम्बन्ध रखती है और उनमें भौतिक प्रेम द्वारा ईश्वरीय प्रेम का प्रतिपादन किया गया है।

4. उनके लिखने वाले प्रायः वे मुसलमान थे, जिन्हें हिन्दू-धर्म का भी थोड़ा बहुत ज्ञान था।

5. ए लोग किसी सम्प्रदाय विशेष का खण्डन-मण्डन तो नहीं करते थे, फिर भी मुसलमान

धर्म की ओर अधिक झुके हुए थे।

6. उन काव्यों में प्रेम-सौंदर्य की प्रधानता है परमात्मा यहाँ माशूक (प्रियतम) होने से अतिंद्य सुन्दर है और उसके प्रति आशिक (प्रेमी) के मन में अगाध प्रेम है।

' प्रेम में विरह (वियोग) पक्ष को प्रधानता दी गई है।